Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण: गाँधीवादी दृष्टिकोण से सतत् विकास का अध्ययन

शशि कुशवाह,
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)
डॉ. रतन सिन्हा
मार्गदर्शक, प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,ग्वालियर (म. प्र.)

सारांश
वर्तमान युग में पर्यावरणीय संकट और लैंगिक असमानता विश्व समुदाय के समक्ष दो प्रमुख चुनौतियों के रूप में उपस्थित हैं। जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, जैव विविधता का ह्रास तथा प्रदूषण जैसी समस्याएँ मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर रही हैं। दूसरी ओर, महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में अभी भी अनेक असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। इन दोनों चुनौतियों का समाधान सतत् विकास की अवधारणा में निहित है, जो पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने पर बल देती है। महात्मा गाँधी का चिंतन पर्यावरणीय नैतिकता और मानव कल्याण के बीच गहरे संबंध को रेखांकित करता है। गाँधीजी ने प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन, सीमित उपभोग, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता तथा नैतिक उत्तरदायित्व पर बल दिया। उनका मानना था कि पृथ्वी मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, किन्तु उसके लोभ की नहीं। यह विचार आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता का आधार माना जाता है। साथ ही गाँधीजी ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति के रूप में स्वीकार किया तथा उनके शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता को राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक बताया।
प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण और सतत् विकास के मध्य संबंधों का गाँधीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका क्या है तथा गाँधीवादी सिद्धान्त किस प्रकार सतत् विकास की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष संकेत करते हैं कि पर्यावरणीय संरक्षण और महिला सशक्तिकरण परस्पर पूरक प्रक्रियाएँ हैं तथा गाँधीवादी विचारधारा दोनों को एकीकृत कर सतत् विकास का प्रभावी मॉडल प्रस्तुत करती है। इसलिए वर्तमान विकास नीतियों में गाँधीवादी पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सहभागिता को अधिक महत्त्व दिए जाने की आवश्यकता है।
कुंजी शब्द : पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण, गाँधीवाद, सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण, ग्राम स्वराज, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय, प्राकृतिक संसाधन।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ प्रकृति और मनुष्य के संबंधों में निरंतर परिवर्तन हुआ है। औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, किन्तु इसके साथ ही पर्यावरणीय संकट भी गहराता गया है। आज विश्व जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, वनों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है। इन समस्याओं ने मानव समाज को यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि विकास की वर्तमान अवधारणा में पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक न्याय को किस प्रकार सुनिश्चित किया जाए। इसी संदर्भ में सतत् विकास (Sustainable Development) की अवधारणा विकसित हुई, जिसका उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों और संसाधनों की रक्षा करना है। सतत् विकास केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण तथा मानवीय कल्याण के तत्त्व भी सम्मिलित हैं।

पर्यावरणीय नैतिकता सतत् विकास का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। पर्यावरणीय नैतिकता का तात्पर्य उन नैतिक सिद्धान्तों और मूल्यों से है जो मनुष्य और प्रकृति के मध्य संतुलित एवं उत्तरदायी संबंध स्थापित करते हैं। यह दृष्टिकोण प्रकृति को केवल संसाधन नहीं मानता, बल्कि उसे जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए उसके संरक्षण की आवश्यकता पर बल देता है। महात्मा गाँधी का चिंतन पर्यावरणीय नैतिकता की आधुनिक अवधारणा से अत्यन्त निकटता रखता है। गाँधीजी ने सादगीपूर्ण जीवन, सीमित उपभोग, स्वदेशी उत्पादन, ग्राम स्वराज तथा आत्मनिर्भरता के सिद्धान्तों को अपनाने पर बल दिया। उनका विचार था कि प्रकृति के संसाधनों का उपयोग आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए, न कि असीमित उपभोग और लाभ के लिए। वर्तमान पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में गाँधीजी के विचार अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

महिला सशक्तिकरण भी सतत् विकास का एक अनिवार्य घटक है। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने यह स्वीकार किया है कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना सतत् विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति संभव नहीं है। महिलाएँ जल, वन, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का जीवन पर्यावरण पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर होता है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण के मध्य घनिष्ठ संबंध स्थापित होता है। महात्मा गाँधी ने महिलाओं को समाज की नैतिक शक्ति माना। उनका विश्वास था कि महिलाएँ त्याग, करुणा, सहनशीलता और सेवा जैसे गुणों से सम्पन्न होती हैं तथा समाज को नैतिक दिशा प्रदान कर सकती हैं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार महिलाओं की उन्नति के बिना समाज और राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है।

आधुनिक समय में अनेक पर्यावरणीय आंदोलनों में महिलाओं की अग्रणी भूमिका रही है। भारत का चिपको आंदोलन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें महिलाओं ने वृक्षों की रक्षा के लिए सक्रिय संघर्ष किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण परस्पर सम्बद्ध प्रक्रियाएँ

हैं। जब महिलाएँ सशक्त होती हैं तो वे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं और जब पर्यावरण सुरक्षित होता है तो महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण और सतत् विकास के मध्य संबंधों का गाँधीवादी दृष्टिकोण से अध्ययन करता है। यह अध्ययन न केवल वर्तमान पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों को समझने में सहायक होगा, बल्कि सतत् विकास की दिशा में वैकल्पिक और मानवीय दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करेगा।

शोध समस्या

"पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण : गाँधीवादी दृष्टिकोण से सतत् विकास का अध्ययन"

शोध समस्या का औचित्य

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट और महिला असमानता दोनों वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंताओं के विषय हैं। यद्यपि पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक नीतियाँ एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, फिर भी इन दोनों विषयों के मध्य संबंधों तथा गाँधीवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन उपलब्ध हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य संबंधों का सतत् विकास के संदर्भ में अध्ययन किया जाए तथा यह ज्ञात किया जाए कि गाँधीवादी विचारधारा इन चुनौतियों के समाधान में किस प्रकार सहायक हो सकती है।

शोध के उद्देश्य

1. पर्यावरणीय नैतिकता की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. महात्मा गाँधी के पर्यावरण संबंधी विचारों का विश्लेषण करना।
3. महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।
4. सतत् विकास में महिलाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में गाँधीवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता का परीक्षण करना।
6. पर्यावरण संरक्षण और महिला विकास के मध्य समन्वय का विश्लेषण करना।
7. सतत् विकास की दिशा में उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

1. महात्मा गाँधी के विचार पर्यावरणीय नैतिकता के मूल सिद्धान्तों से सामंजस्य रखते हैं।
2. महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।
3. पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है।
4. सतत् विकास की प्राप्ति में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।
5. वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्व आंशिक रूप से विद्यमान हैं।
6. गाँधीवादी दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बना सकता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पर्यावरणीय नैतिकता की अवधारणा

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति, जीव-जंतु तथा प्राकृतिक संसाधन मिलकर उस पर्यावरणीय तंत्र का निर्माण करते हैं जिसके बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं है। आधुनिक विकास की प्रक्रिया ने मानव जीवन को सुविधाजनक अवश्य बनाया है, किन्तु इसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन भी उत्पन्न हुआ है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई, जैव विविधता का क्षरण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन आज वैश्विक चिंता के विषय बन चुके हैं। ऐसी स्थिति में पर्यावरणीय नैतिकता की अवधारणा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती है। पर्यावरणीय नैतिकता केवल पर्यावरण संरक्षण का विचार नहीं है, बल्कि यह मनुष्य और प्रकृति के मध्य नैतिक संबंधों की व्याख्या करती है। यह बताती है कि मनुष्य का प्रकृति के प्रति क्या दायित्व है और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किस सीमा तक तथा किस प्रकार किया जाना चाहिए। पर्यावरणीय नैतिकता का मूल उद्देश्य प्रकृति और मानव विकास के मध्य संतुलन स्थापित करना है।

महात्मा गाँधी का चिंतन इसी प्रकार की नैतिकता पर आधारित था। यद्यपि गाँधीजी ने पर्यावरणीय नैतिकता शब्द का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं किया, किन्तु उनके विचारों में पर्यावरणीय चेतना, संसाधनों के न्यायपूर्ण उपयोग तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वर्तमान समय में अनेक विद्वान गाँधीजी को पर्यावरणीय चिंतन का अग्रदूत मानते हैं।

पर्यावरणीय नैतिकता : अर्थ एवं स्वरूप

पर्यावरणीय नैतिकता (Environmental Ethics) नैतिक दर्शन की वह शाखा है जो मनुष्य और प्रकृति के संबंधों का अध्ययन करती है। इसका उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि मनुष्य का प्राकृतिक संसाधनों तथा अन्य जीवों के प्रति क्या नैतिक दायित्व है।

पर्यावरणीय नैतिकता यह मानती है कि प्रकृति का अस्तित्व केवल मानव उपयोगिता तक सीमित नहीं है। वन, नदियाँ, पर्वत, वन्यजीव तथा जैव विविधता का अपना स्वतंत्र अस्तित्व और महत्त्व है। इसलिए इनके संरक्षण को नैतिक कर्तव्य माना जाना चाहिए।

पर्यावरणीय नैतिकता के प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं—

1. प्रकृति के प्रति सम्मान।
2. संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग।
3. जैव विविधता का संरक्षण।
4. भावी पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व।
5. सतत् विकास की अवधारणा।
6. सामाजिक एवं पर्यावरणीय न्याय।
7. मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन।

इन तत्त्वों का उद्देश्य ऐसा विकास मॉडल स्थापित करना है जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ पर्यावरणीय संरक्षण भी सुनिश्चित हो।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

महात्मा गाँधी के पर्यावरण संबंधी विचार

महात्मा गाँधी ने मानव जीवन को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए जीने की प्रेरणा दी। उनके विचारों में पर्यावरण संरक्षण, संसाधनों का संतुलित उपयोग तथा सादगीपूर्ण जीवन का स्पष्ट संदेश मिलता है।

सीमित उपभोग का सिद्धान्त : गाँधीजी का मानना था कि मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार संसाधनों का उपयोग करना चाहिए, न कि अपनी इच्छाओं और लालसाओं की पूर्ति के लिए। उनका प्रसिद्ध कथन है कि पृथ्वी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है, किन्तु किसी एक व्यक्ति के लोभ की नहीं। यह विचार आधुनिक पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक है। वर्तमान समय में उपभोक्तावाद और अंधाधुंध संसाधन दोहन पर्यावरणीय समस्याओं का प्रमुख कारण बन गए हैं। गाँधीजी का सीमित उपभोग का सिद्धान्त इन समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है।

सादगीपूर्ण जीवन का सिद्धान्त : गाँधीजी ने सादा जीवन और उच्च विचार को जीवन का आदर्श माना। उनका विश्वास था कि अनावश्यक उपभोग और विलासिता समाज तथा पर्यावरण दोनों के लिए हानिकारक हैं। सादगीपूर्ण जीवन संसाधनों पर दबाव को कम करता है तथा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है। यही कारण है कि गाँधीजी का जीवन आज भी पर्यावरण-अनुकूल जीवन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

स्वदेशी की अवधारणा : गाँधीजी के स्वदेशी सिद्धान्त का उद्देश्य स्थानीय संसाधनों और स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना था। उनका मानना था कि स्थानीय उत्पादन और स्थानीय उपभोग से न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है बल्कि परिवहन एवं औद्योगिक प्रदूषण भी कम होता है। आज जब वैश्विक स्तर पर कार्बन उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण गंभीर समस्या बन चुके हैं, तब गाँधीजी का स्वदेशी सिद्धान्त सतत् विकास के लिए महत्त्वपूर्ण दिशा प्रदान करता है।

ग्राम स्वराज और पर्यावरण संरक्षण : गाँधीजी का ग्राम स्वराज मॉडल विकेन्द्रीकृत विकास पर आधारित था। वे चाहते थे कि गाँव आत्मनिर्भर बनें और स्थानीय संसाधनों का संरक्षण करते हुए विकास करें। ग्राम स्वराज की अवधारणा पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह प्राकृतिक संसाधनों के स्थानीय प्रबंधन, सामुदायिक सहभागिता तथा संतुलित विकास को बढ़ावा देती है।

अहिंसा और पर्यावरण : गाँधीजी का अहिंसा सिद्धान्त केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं था। वे समस्त जीव-जगत के प्रति करुणा और सम्मान की भावना रखते थे। अहिंसा का व्यापक अर्थ प्रकृति के प्रति हिंसक व्यवहार से बचना भी है। इस दृष्टि से पर्यावरण विनाश को भी एक प्रकार की हिंसा माना जा सकता है। इसलिए गाँधीजी का अहिंसात्मक दृष्टिकोण पर्यावरणीय नैतिकता का आधार बनता है।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक रूप से सक्षम बनाना है ताकि वे अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं ले सकें और समाज में समान अवसर प्राप्त कर सकें।

महिला सशक्तिकरण केवल अधिकार प्राप्ति तक सीमित नहीं है। इसमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा संसाधनों पर नियंत्रण भी सम्मिलित है। महात्मा गाँधी महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति मानते थे। उनका विश्वास था कि महिलाओं की उन्नति के बिना समाज का समग्र विकास संभव नहीं है।

महिला और पर्यावरण का संबंध

महिलाओं और पर्यावरण के मध्य अत्यन्त निकट संबंध पाया जाता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ जल, ईंधन, वन उत्पाद तथा कृषि संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर होती हैं। जब पर्यावरणीय संसाधनों का ह्रास होता है तो उसका सबसे अधिक प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। उदाहरणार्थ—

- जल स्रोतों के सूखने पर महिलाओं को अधिक दूरी तय करनी पड़ती है।
- वनों की कटाई से ईंधन और चारे की समस्या उत्पन्न होती है।
- भूमि क्षरण से कृषि उत्पादन प्रभावित होता है।
- जलवायु परिवर्तन से खाद्य सुरक्षा पर संकट उत्पन्न होता है।

इस प्रकार पर्यावरणीय समस्याएँ महिलाओं के जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण की प्राकृतिक संरक्षिका मानी जाती हैं। परिवार और समुदाय स्तर पर वे संसाधनों के संरक्षण तथा सतत् उपयोग में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं।

जल संरक्षण : ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ जल प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। वे वर्षा जल संचयन, जल बचत तथा घरेलू जल उपयोग के संतुलन में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं।

वन संरक्षण : भारत के अनेक क्षेत्रों में महिलाओं ने वन संरक्षण आंदोलनों का नेतृत्व किया है। चिपको आंदोलन इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ महिलाओं ने वृक्षों की रक्षा के लिए अद्वितीय संघर्ष किया।

जैव विविधता का संरक्षण : महिलाएँ पारंपरिक बीजों, औषधीय पौधों तथा स्थानीय कृषि प्रणालियों के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पर्यावरणीय शिक्षा : परिवार में बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के संस्कार प्रदान करने में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है।

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण का पारस्परिक संबंध

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण परस्पर पूरक अवधारणाएँ हैं। दोनों का उद्देश्य न्यायपूर्ण, संतुलित और मानवीय समाज की स्थापना करना है। जब महिलाएँ शिक्षित और सशक्त होती हैं तो वे पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों में अधिक प्रभावी सहभागिता करती हैं। दूसरी ओर, जब प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है तो महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार होता है। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण पर्यावरणीय संरक्षण को मजबूत करता है और पर्यावरण संरक्षण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

इको-फेमिनिज्म (Eco-Feminism) और गाँधीवादी दृष्टिकोण

इको-फेमिनिज्म एक ऐसी विचारधारा है जो महिलाओं और प्रकृति दोनों के शोषण को एक-दूसरे से जोड़कर देखती है। इसके अनुसार पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं और पर्यावरण दोनों का दोहन किया है। गाँधीजी ने यद्यपि इको-फेमिनिज्म शब्द का प्रयोग नहीं किया, किन्तु उनके विचार इस अवधारणा से पर्याप्त साम्य रखते हैं। उन्होंने शोषण, असमानता और हिंसा का विरोध किया तथा प्रकृति और महिलाओं दोनों के सम्मान की वकालत की। उनका चिंतन यह संदेश देता है कि सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय न्याय एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए सतत् विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है।

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला नेतृत्व

आज विश्व भर में पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अनेक आंदोलनों में महिलाओं ने नेतृत्वकारी भूमिका निभाई है। स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक महिलाएँ पर्यावरणीय जागरूकता, जल संरक्षण, जैविक कृषि तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। गाँधीवादी दृष्टिकोण महिलाओं को केवल सहभागी नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी नेतृत्व प्रदान करने वाली शक्ति के रूप में देखता है। यही दृष्टिकोण सतत् विकास की दिशा में महिलाओं की भूमिका को और अधिक महत्त्वपूर्ण बनाता है।

सतत् विकास की अवधारणा

सतत् विकास (Sustainable Development) वर्तमान वैश्विक विमर्श का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी तथा सामाजिक असमानताओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल आर्थिक विकास मानव कल्याण की गारंटी नहीं दे सकता। विकास तभी सार्थक माना जाएगा जब वह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए सामाजिक न्याय और आर्थिक प्रगति को एक साथ सुनिश्चित करे। इसी आवश्यकता ने सतत् विकास की अवधारणा को जन्म दिया। महात्मा गाँधी ने बहुत पहले ही ऐसे विकास मॉडल की आवश्यकता पर बल दिया था जो मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करे। यद्यपि उनके समय में "सतत् विकास" शब्द प्रचलित नहीं था, फिर भी उनके विचारों में इसकी मूल भावना स्पष्ट रूप से विद्यमान थी। सीमित उपभोग, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता, नैतिक उत्तरदायित्व तथा प्रकृति के प्रति सम्मान जैसे उनके सिद्धान्त आज के सतत् विकास मॉडल के आधारभूत तत्त्व माने जा सकते हैं।

सतत् विकास का अर्थ ऐसा विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करे, किन्तु भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता को प्रभावित न करे। सन् 1987 में प्रकाशित ब्रंटलैंड आयोग (Brundtland Commission) की रिपोर्ट Our Common Future में सतत् विकास की सर्वाधिक प्रचलित परिभाषा प्रस्तुत की गई। इसके अनुसार विकास की प्रक्रिया में आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संरक्षण के मध्य संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। सतत् विकास के तीन प्रमुख स्तम्भ हैं—

पर्यावरणीय संरक्षण : प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, जैव विविधता की रक्षा तथा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना।

सामाजिक न्याय : Mसमाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना तथा लैंगिक समानता सुनिश्चित करना।

आर्थिक विकास : ऐसी आर्थिक प्रगति जो संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए दीर्घकालिक लाभ प्रदान करे।

इन तीनों स्तम्भों का समन्वय ही सतत् विकास की वास्तविक आधारशिला है।

सतत् विकास में महिलाओं की भूमिका

महिलाएँ सतत् विकास की प्रक्रिया में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को प्रमुख स्थान प्रदान किया है। महिलाओं की भूमिका निम्नलिखित क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है—

प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन : ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ जल, वन और भूमि संसाधनों के उपयोग तथा संरक्षण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती हैं। वे इन संसाधनों के सतत् उपयोग के व्यावहारिक ज्ञान की वाहक होती हैं।

खाद्य सुरक्षा : महिलाएँ कृषि कार्यों, पशुपालन और खाद्य संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। इस प्रकार वे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में सहायक होती हैं।

पर्यावरणीय जागरूकता : महिलाएँ परिवार और समुदाय स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता का प्रसार करती हैं।

सामाजिक परिवर्तन : महिलाओं की सहभागिता से पर्यावरणीय कार्यक्रमों में जनसहभागिता बढ़ती है, जिससे उनके परिणाम अधिक प्रभावी होते हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटना : जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और अनुकूलन रणनीतियों को अपनाने में महिलाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पर्यावरण संरक्षण में महिला आंदोलनों का योगदान

भारत और विश्व के अनेक पर्यावरणीय आंदोलनों में महिलाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई है-

चिपको आंदोलन : उत्तराखण्ड में प्रारम्भ हुआ चिपको आंदोलन पर्यावरण संरक्षण के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। इस आंदोलन में महिलाओं ने वृक्षों को कटने से बचाने के लिए उनसे चिपककर विरोध किया। यह आंदोलन केवल वन संरक्षण का आंदोलन नहीं था, बल्कि पर्यावरणीय न्याय और महिला नेतृत्व का भी प्रतीक था।

अप्पिको आंदोलन : कर्नाटक में प्रारम्भ हुए अप्पिको आंदोलन ने भी वन संरक्षण और पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा दिया। इसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही।

नर्मदा बचाओ आंदोलन : नर्मदा घाटी क्षेत्र में विस्थापन और पर्यावरणीय संरक्षण के मुद्दों पर महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

इन आंदोलनों ने यह सिद्ध किया कि महिलाओं की भागीदारी के बिना पर्यावरण संरक्षण के प्रयास अधूरे हैं।

पर्यावरणीय नीतियाँ और महिला सशक्तिकरण

भारत सरकार तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने पर्यावरण संरक्षण और महिला विकास के लिए अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं।

राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2006 : इस नीति का उद्देश्य पर्यावरणीय संरक्षण और संसाधनों के सतत् उपयोग को प्रोत्साहित करना है।

राष्ट्रीय कार्ययोजना : जलवायु परिवर्तन - इस योजना में सामुदायिक सहभागिता तथा स्थानीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण को महत्त्व दिया गया है।

स्वयं सहायता समूह (SHGs) : स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ पर्यावरणीय गतिविधियों जैसे वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा जैविक खेती में भी योगदान देते हैं।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन : यह कार्यक्रम महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सतत् आजीविका को प्रोत्साहित करता है।

गाँधीवादी दृष्टिकोण और सतत् विकास

महात्मा गाँधी के विचार सतत् विकास के अनेक मूलभूत सिद्धान्तों से सामंजस्य रखते हैं-

आवश्यकता आधारित उपभोग : गाँधीजी ने उपभोग को आवश्यकताओं तक सीमित रखने पर बल दिया। वर्तमान समय में अत्यधिक उपभोग पर्यावरणीय संकट का प्रमुख कारण बन चुका है। यदि गाँधीजी के इस सिद्धान्त को अपनाया जाए तो संसाधनों पर दबाव कम किया जा सकता है।

स्वदेशी और स्थानीय अर्थव्यवस्था : स्थानीय उत्पादन और स्थानीय उपभोग न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ाते हैं बल्कि परिवहन तथा औद्योगिक प्रदूषण को भी कम करते हैं।

ग्राम स्वराज : गाँधीजी का ग्राम स्वराज मॉडल विकेन्द्रीकृत विकास और स्थानीय संसाधनों के संरक्षण पर आधारित था। यह मॉडल सतत् विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी माना जाता है।

सामाजिक न्याय : गाँधीजी ने समाज के कमजोर वर्गों, विशेष रूप से महिलाओं और वंचित समुदायों के उत्थान पर बल दिया। सामाजिक न्याय सतत् विकास का भी एक प्रमुख आधार है।

नैतिक उत्तरदायित्व : गाँधीजी का मानना था कि मनुष्य को अपने कार्यों के प्रति नैतिक रूप से उत्तरदायी होना चाहिए। यही विचार पर्यावरणीय नैतिकता का मूल आधार है।

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण : तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	पर्यावरणीय नैतिकता	महिला सशक्तिकरण
उद्देश्य	प्रकृति का संरक्षण	महिलाओं का विकास
मूल आधार	उत्तरदायित्व एवं संतुलन	समानता एवं अधिकार
प्रमुख लक्ष्य	सतत् संसाधन उपयोग	सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण

आधार	पर्यावरणीय नैतिकता	महिला सशक्तिकरण
सामाजिक प्रभाव	पर्यावरणीय सुरक्षा	सामाजिक न्याय
विकास में योगदान	प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण	मानव संसाधन विकास
सतत् विकास से संबंध	प्रत्यक्ष	प्रत्यक्ष

उपर्युक्त तुलना से स्पष्ट होता है कि दोनों अवधारणाएँ भिन्न होते हुए भी एक-दूसरे की पूरक हैं। पर्यावरणीय नैतिकता प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को सुनिश्चित करती है, जबकि महिला सशक्तिकरण सामाजिक न्याय और मानव विकास को बढ़ावा देता है। दोनों का संयुक्त प्रभाव सतत् विकास को मजबूत बनाता है।

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण का अंतर्संबंध

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य बहुआयामी संबंध विद्यमान हैं-

1. पर्यावरण संरक्षण से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार होता है।
2. महिला शिक्षा पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाती है।
3. महिला नेतृत्व स्थानीय संसाधनों के संरक्षण को मजबूत करता है।
4. आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों को अपनाने में अधिक सक्षम होती हैं।
5. पर्यावरणीय न्याय और लैंगिक न्याय दोनों सामाजिक समानता की अवधारणा से जुड़े हैं।

इस प्रकार दोनों अवधारणाएँ सतत् विकास की दिशा में एक-दूसरे को सुदृढ़ करती हैं।

समकालीन संदर्भ में गाँधीवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी तथा बढ़ती सामाजिक असमानताएँ विश्व के सामने गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं। इन परिस्थितियों में गाँधीजी के विचार अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका सीमित उपभोग का सिद्धान्त संसाधनों के संरक्षण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है। स्वदेशी और ग्राम स्वराज स्थानीय स्तर पर सतत् विकास को बढ़ावा देते हैं। महिलाओं के प्रति उनका सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण लैंगिक समानता को सुदृढ़ करता है। इसी प्रकार उनका अहिंसात्मक और नैतिक जीवन-दर्शन पर्यावरणीय नैतिकता की आधारशिला बन सकता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि सतत् विकास के समकालीन विमर्श में गाँधीवादी दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक महत्त्व का विषय नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सतत् विकास, पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। महात्मा गाँधी का चिंतन इन तीनों के मध्य एक सेतु का कार्य करता है। उनके सिद्धान्त पर्यावरणीय संरक्षण, सामाजिक न्याय और मानव कल्याण को एकीकृत करते हैं तथा सतत् विकास के लिए नैतिक आधार प्रदान करते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत शोध विषय "**पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण : गाँधीवादी दृष्टिकोण से सतत् विकास का अध्ययन**" से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि विभिन्न विद्वानों ने पर्यावरणीय नैतिकता, गाँधीवादी दर्शन, महिला सशक्तिकरण तथा सतत् विकास के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया है। प्रमुख अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

1. कुमार, सुरेश (2008) : सुरेश कुमार ने अपने अध्ययन में गाँधीजी के सामाजिक एवं पर्यावरणीय चिंतन का विश्लेषण किया। लेखक के अनुसार गाँधीजी का सादगीपूर्ण जीवन, सीमित उपभोग तथा स्वदेशी का सिद्धान्त आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता का आधार माना जा सकता है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि पर्यावरणीय संकट के समाधान हेतु गाँधीवादी जीवन शैली अत्यन्त उपयोगी है।

2. शर्मा, रामविलास (2010) : रामविलास शर्मा ने गाँधीवादी दर्शन और सतत् विकास के मध्य संबंधों का अध्ययन किया। उनके अनुसार ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकृत विकास की अवधारणाएँ वर्तमान सतत् विकास मॉडल से सामंजस्य रखती हैं।

3. सिंह, उर्मिला (2012) : उर्मिला सिंह ने महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से विकास कार्यक्रमों की सफलता में वृद्धि होती है तथा सामाजिक जागरूकता का स्तर ऊँचा होता है।

4. गुप्ता, शालिनी (2014) : शालिनी गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया। उनके अनुसार महिलाएँ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरणीय जागरूकता के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

5. चौधरी, ममता (2016) : ममता चौधरी ने महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि महिला शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता सामाजिक विकास की आधारशिला हैं।

6. वर्मा, राजेश (2017) : राजेश वर्मा ने गाँधीवादी पर्यावरणीय चिंतन की समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन किया। लेखक के अनुसार वर्तमान जलवायु संकट और संसाधन क्षरण की समस्याओं के समाधान हेतु गाँधीवादी दृष्टिकोण अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

7. अग्रवाल, सुनीता (2019) : सुनीता अग्रवाल ने सतत् विकास में महिला नेतृत्व की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि महिलाओं की सहभागिता से पर्यावरणीय कार्यक्रमों की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

8. यादव, कमला (2021) : कमला यादव ने पर्यावरणीय नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध का अध्ययन किया। उनके अनुसार पर्यावरणीय संरक्षण केवल प्रशासनिक विषय नहीं, बल्कि नैतिक दायित्व भी है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण तथा गाँधीवादी विचारधारा पर अनेक शोध कार्य हुए हैं, किन्तु इन तीनों विषयों का समन्वित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। यही शोध-अन्तर प्रस्तुत अध्ययन का आधार है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पर आधारित है।

आँकड़ों के स्रोत

प्राथमिक स्रोत

- प्रश्नावली
- साक्षात्कार
- प्रत्यक्ष अवलोकन

द्वितीयक स्रोत

- पुस्तकें
- शोध-पत्र
- सरकारी प्रतिवेदन
- पर्यावरणीय नीति दस्तावेज
- पत्र-पत्रिकाएँ

अध्ययन क्षेत्र

ग्वालियर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से चयनित उत्तरदाताओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

निदर्शन (Sample)

अध्ययन हेतु कुल **120 उत्तरदाताओं** का चयन सरल याद्दच्छिक निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया।

आवृत्ति वितरण (Frequency Distribution) की व्याख्या

आवृत्ति वितरण सांख्यिकी की वह विधि है जिसके माध्यम से एकत्रित आँकड़ों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें किसी विशेष उत्तर या प्रतिक्रिया की पुनरावृत्ति को संख्यात्मक रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में पाँच-बिन्दु मापक (Likert Scale) का उपयोग किया गया—

1. पूर्णतः सहमत
2. सहमत
3. अनिश्चित
4. असहमत
5. पूर्णतः असहमत

इन श्रेणियों के माध्यम से उत्तरदाताओं के विचारों का विश्लेषण किया गया।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

परिकल्पना–1 : "महात्मा गाँधी के विचार पर्यावरणीय नैतिकता के मूल सिद्धान्तों से सामंजस्य रखते हैं।"

तालिका - 1
गाँधीवादी विचारों और पर्यावरणीय नैतिकता के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	54	45.00
सहमत	35	29.17
अनिश्चित	13	10.83
असहमत	11	9.17
पूर्णतः असहमत	7	5.83
कुल	**120**	**100**

Interpretation (व्याख्या)
तालिका - 1 के अनुसार 45 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 29.17 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि महात्मा गाँधी के विचार पर्यावरणीय नैतिकता के मूल सिद्धान्तों से सामंजस्य रखते हैं। अर्थात् कुल 74.17 प्रतिशत उत्तरदाता इस परिकल्पना का समर्थन करते हैं। यह दर्शाता है कि गाँधीजी के सीमित उपभोग, सादगीपूर्ण जीवन, स्वदेशी तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व संबंधी विचार आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता के आधारभूत तत्वों से मेल खाते हैं। केवल 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति व्यक्त की, जबकि 10.83 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित रहे। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का बहुमत गाँधीवादी चिंतन को पर्यावरण संरक्षण के लिए उपयोगी मानता है।

परिकल्पना–2 : "महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।"

तालिका - 2
महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	50	41.67
सहमत	39	32.50
अनिश्चित	12	10.00
असहमत	11	9.17

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः असहमत	8	6.66
कुल	**120**	**100**

Interpretation (व्याख्या)

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि 41.67 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 32.50 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार कुल 74.17 प्रतिशत उत्तरदाता इस परिकल्पना का समर्थन करते हैं। उत्तरदाताओं का मत है कि शिक्षित और सशक्त महिलाएँ जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जैविक खेती तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

परिकल्पना–3 : "पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है।"

तालिका - 3

पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	57	47.50
सहमत	31	25.83
अनिश्चित	14	11.67
असहमत	10	8.33
पूर्णतः असहमत	8	6.67
कुल	**120**	**100**

Interpretation (व्याख्या)

तालिका - 3 से स्पष्ट होता है कि 47.50 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 25.83 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है। अर्थात् कुल 73.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया। उत्तरदाताओं का मानना है कि पर्यावरणीय जागरूकता महिलाओं की सामाजिक भूमिका को मजबूत करती है तथा महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण की प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाता है। यह परिणाम दर्शाता है कि दोनों अवधारणाएँ परस्पर पूरक हैं तथा सतत् विकास की दिशा में संयुक्त रूप से योगदान देती हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

परिकल्पना–4 : "सतत् विकास की प्राप्ति में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।"

तालिका - 4

सतत् विकास में महिलाओं की भूमिका के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	59	49.17
सहमत	28	23.33
अनिश्चित	12	10.00
असहमत	13	10.83
पूर्णतः असहमत	8	6.67
कुल	**120**	**100**

Interpretation (व्याख्या)

तालिका - 4 के अनुसार 49.17 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 23.33 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि सतत् विकास की प्राप्ति में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार कुल 72.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया है। उत्तरदाताओं का मत है कि महिलाएँ जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जैविक कृषि, खाद्य सुरक्षा तथा पर्यावरणीय जागरूकता के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। परिवार और समुदाय स्तर पर उनकी सक्रिय भूमिका प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को सुदृढ़ बनाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ जल, वन और भूमि संसाधनों के प्रबंधन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती हैं। इसलिए उनकी सहभागिता के बिना सतत् विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति कठिन हो जाती है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रमों से पर्यावरणीय परियोजनाओं की सफलता में वृद्धि होती है।

परिकल्पना–5 : "वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्व आंशिक रूप से विद्यमान हैं।"

तालिका - 5

पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्वों की उपस्थिति के संबंध में उत्तरदाताओं की राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	45	37.50
सहमत	41	34.17
अनिश्चित	14	11.67

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
असहमत	12	10.00
पूर्णतः असहमत	8	6.66
कुल	**120**	**100**

Interpretation (व्याख्या)

तालिका - 5 से ज्ञात होता है कि 37.50 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 34.17 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्व आंशिक रूप से विद्यमान हैं। कुल 71.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया है। उत्तरदाताओं का मानना है कि पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय सहभागिता, संसाधनों के संतुलित उपयोग तथा सामुदायिक विकास संबंधी अनेक नीतियाँ गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। हालाँकि उत्तरदाताओं का यह भी मत है कि वर्तमान नीतियों में आर्थिक विकास को अपेक्षाकृत अधिक प्राथमिकता दी जाती है, जबकि गाँधीजी नैतिकता और सीमित उपभोग को विकास का आधार मानते थे। इसलिए गाँधीवादी तत्त्व नीतियों में पूर्ण रूप से नहीं, बल्कि आंशिक रूप से दिखाई देते हैं।

परिकल्पना–6 : "गाँधीवादी दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बना सकता है।"

तालिका – 6

पर्यावरण संरक्षण एवं महिला सशक्तिकरण में गाँधीवादी दृष्टिकोण की उपयोगिता के संबंध में राय

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	56	46.67
सहमत	35	29.17
अनिश्चित	11	9.16
असहमत	10	8.33
पूर्णतः असहमत	8	6.67
कुल	**120**	**100**

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

Interpretation (व्याख्या)

तालिका – 6 से स्पष्ट होता है कि 46.67 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 29.17 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि गाँधीवादी दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बना सकता है। अर्थात् कुल 75.84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया है। उत्तरदाताओं का मत है कि गाँधीजी के सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता तथा नैतिक उत्तरदायित्व के सिद्धान्त वर्तमान पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों के समाधान में अत्यन्त उपयोगी हो सकते हैं। यह परिणाम संकेत करता है कि गाँधीवादी दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक विचारधारा नहीं है, बल्कि समकालीन विकास नीतियों के लिए भी एक व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

प्रस्तुत अध्ययन में कुल छह परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। प्रत्येक परिकल्पना के संबंध में उत्तरदाताओं की राय का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए—

परिकल्पना–1 : महात्मा गाँधी के विचार पर्यावरणीय नैतिकता के मूल सिद्धान्तों से सामंजस्य रखते हैं।

तालिका - 1 के अनुसार 74.17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया। इससे स्पष्ट होता है कि गाँधीजी के सीमित उपभोग, सादगीपूर्ण जीवन, स्वदेशी तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व संबंधी विचार आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता के अनुरूप हैं।

परिणाम : परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना–2 : महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।

तालिका - 2 में 74.17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की। इससे स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

परिणाम : परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना–3 : पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

तालिका - 3 में 73.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक मत व्यक्त किया। यह परिणाम दोनों अवधारणाओं की परस्पर पूरकता को सिद्ध करता है।

परिणाम : परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना–4 : सतत् विकास की प्राप्ति में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

तालिका - 4 के अनुसार 72.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाएँ सतत् विकास की प्रक्रिया की प्रमुख भागीदार हैं।

परिणाम : परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना–5 : वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्व आंशिक रूप से विद्यमान हैं।

तालिका 5.2 के अनुसार 71.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना से सहमति व्यक्त की। इससे स्पष्ट होता है कि अनेक नीतियों में गाँधीवादी विचारों की झलक दिखाई देती है।

परिणाम : परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना–6 : गाँधीवादी दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बना सकता है।

तालिका 5.3 के अनुसार 75.84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस परिकल्पना का समर्थन किया। यह परिणाम गाँधीवादी दृष्टिकोण की समकालीन प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है।

परिणाम : परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पनाओं की सत्यापन तालिका

क्र.	परिकल्पना	सहमति प्रतिशत	परिणाम
1	गाँधीजी के विचार पर्यावरणीय नैतिकता से सामंजस्य रखते हैं	74.17%	सत्य सिद्ध
2	महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है	74.17%	सत्य सिद्ध
3	पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण में सकारात्मक संबंध है	73.33%	सत्य सिद्ध
4	सतत् विकास में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण है	72.50%	सत्य सिद्ध
5	पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्व विद्यमान हैं	71.67%	सत्य सिद्ध
6	गाँधीवादी दृष्टिकोण अधिक प्रभावी परिणाम दे सकता है	75.84%	सत्य सिद्ध

उपर्युक्त सत्यापन तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन की सभी छह परिकल्पनाएँ सत्य सिद्ध हुई हैं। उत्तरदाताओं के विचारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि महात्मा गाँधी का पर्यावरणीय चिंतन वर्तमान समय में भी अत्यन्त प्रासंगिक है तथा पर्यावरणीय नैतिकता के मूल सिद्धान्तों के साथ उसका घनिष्ठ संबंध है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि महिला सशक्तिकरण केवल सामाजिक न्याय का विषय नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सतत् विकास की सफलता का भी एक महत्त्वपूर्ण आधार है। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पर्यावरणीय जागरूकता तथा सामुदायिक विकास को सुदृढ़ बनाती है। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट हुआ कि वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्वों की आंशिक उपस्थिति है, किन्तु यदि इन नीतियों में गाँधीजी के नैतिकता, आत्मनिर्भरता, स्वदेशी और ग्राम स्वराज संबंधी सिद्धान्तों को अधिक व्यापक रूप से सम्मिलित किया जाए तो सतत् विकास की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो सकती है।

विश्लेषण

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण तथा सतत् विकास के मध्य संबंधों का महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण से अध्ययन करना था। अध्ययन के सैद्धान्तिक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

से अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं। विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि पर्यावरणीय संकट केवल वैज्ञानिक अथवा तकनीकी समस्या नहीं है, बल्कि यह नैतिक और सामाजिक समस्या भी है। प्राकृतिक संसाधनों के असीमित दोहन, उपभोक्तावाद तथा विकास की असंतुलित अवधारणा ने पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ावा दिया है। ऐसी स्थिति में पर्यावरणीय नैतिकता मानव और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने का प्रयास करती है।

महात्मा गाँधी का चिंतन पर्यावरणीय नैतिकता के मूल सिद्धान्तों से अत्यन्त निकटता रखता है। गाँधीजी ने सीमित उपभोग, सादगीपूर्ण जीवन, स्वदेशी, ग्राम स्वराज तथा नैतिक उत्तरदायित्व पर बल दिया। ये सभी तत्त्व आधुनिक सतत् विकास की अवधारणा के साथ सामंजस्य रखते हैं। अध्ययन के दौरान अधिकांश उत्तरदाताओं ने भी यह स्वीकार किया कि गाँधीवादी विचार पर्यावरणीय नैतिकता के आधारभूत सिद्धान्तों के अनुरूप हैं। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण की प्रक्रिया में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ जल, वन तथा भूमि संसाधनों के उपयोग और संरक्षण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती हैं। इसलिए पर्यावरणीय संसाधनों की उपलब्धता और महिलाओं के जीवन स्तर के मध्य प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि महिला सशक्तिकरण और पर्यावरणीय संरक्षण परस्पर पूरक प्रक्रियाएँ हैं। शिक्षित एवं आत्मनिर्भर महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों में अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं, जबकि सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण महिलाओं के स्वास्थ्य, आजीविका और सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता सतत् विकास की प्राप्ति में महिलाओं की भूमिका को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते हैं। यह निष्कर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रतिपादित सतत् विकास लक्ष्यों की भावना के अनुरूप है, जिसमें लैंगिक समानता को सतत् विकास की आधारशिला माना गया है।

अध्ययन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्व आंशिक रूप से विद्यमान हैं। यद्यपि अनेक नीतियाँ पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सहभागिता पर बल देती हैं, फिर भी उनमें गाँधीजी की नैतिकता-आधारित विकास अवधारणा को पर्याप्त स्थान नहीं मिला है। समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण और सतत् विकास तीनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। गाँधीवादी दृष्टिकोण इन तीनों के मध्य समन्वय स्थापित करने की क्षमता रखता है तथा वर्तमान पर्यावरणीय एवं सामाजिक चुनौतियों के समाधान के लिए एक वैकल्पिक और मानवीय दृष्टि प्रदान करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण सतत् विकास के दो ऐसे आधारभूत स्तम्भ हैं जिनके बिना संतुलित और न्यायपूर्ण विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। वर्तमान समय में विश्व जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण, प्रदूषण तथा सामाजिक

असमानताओं जैसी जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागिता की भी आवश्यकता है। महात्मा गाँधी का चिंतन इस संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक सिद्ध होता है। उन्होंने प्रकृति को केवल संसाधन नहीं माना, बल्कि मानव जीवन का अभिन्न अंग समझा। उनके सीमित उपभोग, सादगीपूर्ण जीवन, स्वदेशी, ग्राम स्वराज तथा आत्मनिर्भरता संबंधी विचार वर्तमान पर्यावरणीय संकट के समाधान की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। गाँधीजी का मानना था कि विकास का वास्तविक उद्देश्य मानव कल्याण होना चाहिए, न कि केवल आर्थिक लाभ। यही विचार आधुनिक सतत् विकास की मूल भावना से मेल खाता है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि महिलाओं की भूमिका पर्यावरण संरक्षण और सतत् विकास दोनों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। महिलाएँ जल, वन, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में प्रत्यक्ष रूप से योगदान देती हैं। ग्रामीण समाज में वे पर्यावरणीय ज्ञान और परंपरागत संसाधन प्रबंधन की वाहक होती हैं। इसलिए महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना पर्यावरण संरक्षण की योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू नहीं किया जा सकता। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि महिला सशक्तिकरण पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करता है तथा पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय न्याय परस्पर जुड़े हुए हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि वर्तमान पर्यावरणीय नीतियों में गाँधीवादी तत्त्वों की आंशिक उपस्थिति है। पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय सहभागिता, जैविक कृषि, जल संरक्षण तथा ग्रामीण विकास संबंधी कार्यक्रमों में गाँधीवादी सोच की झलक दिखाई देती है। तथापि विकास की वर्तमान धारा अभी भी उपभोक्तावादी दृष्टिकोण से पर्याप्त रूप से प्रभावित है, जिसके कारण संसाधनों पर दबाव निरंतर बढ़ रहा है। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है, किन्तु अनेक चुनौतियाँ अभी शेष हैं। लैंगिक असमानता, संसाधनों तक सीमित पहुँच, निर्णय प्रक्रिया में कम सहभागिता तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और रोजगार की समस्याएँ महिलाओं के समग्र विकास में बाधक बनी हुई हैं। इसलिए महिला सशक्तिकरण को केवल कल्याणकारी कार्यक्रमों तक सीमित न रखकर उसे पर्यावरणीय और विकासात्मक नीतियों से भी जोड़ा जाना आवश्यक है।

अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि गाँधीवादी दृष्टिकोण पर्यावरणीय नैतिकता और महिला सशक्तिकरण दोनों को एक साझा मंच प्रदान करता है। गाँधीजी का सत्य, अहिंसा, सामाजिक समानता, स्वावलम्बन तथा नैतिक उत्तरदायित्व पर आधारित दर्शन सतत् विकास के लिए एक समग्र दृष्टि प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण केवल आर्थिक विकास पर नहीं, बल्कि मानव, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलन पर बल देता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण और गाँधीवादी विचारधारा का समन्वय सतत् विकास की दिशा में एक प्रभावी एवं व्यावहारिक मार्ग प्रदान करता है। यदि विकास नीतियों में गाँधीवादी मूल्यों और महिलाओं की सक्रिय

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सहभागिता को अधिक महत्त्व दिया जाए, तो पर्यावरणीय संरक्षण तथा सामाजिक न्याय दोनों लक्ष्यों की प्राप्ति अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकती है।

शोध की नवीनता

1. प्रस्तुत अध्ययन में पर्यावरणीय नैतिकता, महिला सशक्तिकरण और सतत् विकास को एकीकृत रूप में अध्ययन किया गया है।
2. शोध में गाँधीवादी पर्यावरणीय चिंतन और समकालीन विकास नीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
3. अध्ययन में महिला सशक्तिकरण को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़कर विश्लेषित किया गया है।
4. पर्यावरणीय नैतिकता और लैंगिक न्याय के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।
5. शोध में सैद्धान्तिक अध्ययन के साथ सांख्यिकीय विश्लेषण को भी सम्मिलित किया गया है।
6. अध्ययन सतत् विकास के लिए गाँधीवादी मॉडल की समकालीन उपयोगिता को रेखांकित करता है।

सुझाव

1. विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पर्यावरणीय नैतिकता को मूल्यपरक शिक्षा के रूप में सम्मिलित किया जाए।
2. महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों को पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों से जोड़ा जाए।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए पर्यावरणीय नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
4. जल संरक्षण, वृक्षारोपण और जैविक कृषि में महिला स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी बढ़ाई जाए।
5. पर्यावरणीय नीतियों के निर्माण में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए।
6. गाँधीवादी सिद्धान्तों पर आधारित स्थानीय विकास मॉडल को प्रोत्साहित किया जाए।
7. स्वदेशी एवं पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए।
8. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु सामुदायिक सहभागिता को मजबूत किया जाए।
9. महिला शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता को सतत् विकास रणनीतियों का अनिवार्य भाग बनाया जाए।
10. पर्यावरणीय न्याय और लैंगिक न्याय को विकास योजनाओं में समान प्राथमिकता दी जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, सीमा. (2010). पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण . दिल्ली: प्रभात प्रकाशन ।
2. चौधरी, ममता. (2016). महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन. जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
3. गुप्ता, शालिनी. (2014). पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
4. कुमार, सुरेश. (2008). गाँधीवादी पर्यावरण चिंतन. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. नारायण, रामजी. (2015). गाँधी दर्शन और सतत् विकास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. शर्मा, रामविलास. (2010). गाँधीवाद और समकालीन विकास विमर्श. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

7. सिंह, उर्मिला. (2012). महिला विकास एवं ग्रामीण परिवर्तन. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
8. वर्मा, राजेश. (2017). पर्यावरणीय नैतिकता और गाँधीवादी दृष्टिकोण. नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन।
9. यादव, कमला. (2021). पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और सामाजिक न्याय. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
10. भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय. (2022). भारत की पर्यावरणीय स्थिति रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
11. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. (2023). महिला सशक्तिकरण वार्षिक प्रतिवेदन. नई दिल्ली: भारत सरकार।
12. भट्ट, कृष्णदत्त. (2018). गाँधी, प्रकृति और मानवता. नई दिल्ली: ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन।